IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''जोधपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का सांवेगिक क्षमता के संदर्भ में अध्ययन''

सुरेश
शोधार्थी
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

सारांश

In this article the researcher is studying about A Study of teachers working at senior secondary level of Jodhpur city in the context of Emotional Competence. For this study 100 Teachers 50 Male Teachers and 50 Female Teachers from Jodhpur district been randomly selected. The study was executed by using standard Test (Emotional Competence scale by Dr. H. C. Sharma and Dr. R.L. Bhardwaj For data analysis the researcher has opted statistical techniques like Mean, SD, and t-test. The researcher concluded that there was no significant difference been found in Male and Female Teachers at senior secondary level.

1. प्रस्तावना :–

बालक जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक बालक कमल के फूल की भाति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अंधकार में डुबा रहता है। शिक्षा को कैसा होना चाहिए और विद्यार्थियों को किस प्रकार गुणवत्तापूर्वक शिक्षा दी जाए, एक शिक्षक से बेहतर कौन जान सकता है? भारतीय शिक्षा आयोग (1964) के अनुसार ''भारत के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है।'' शिक्षा के इस उद्देश्य को मूर्त रूप देने के लिए एक शिक्षक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने आप को नवीन भूमिकाओं के लिए तैयार करें तथा अपने शिक्षण को बेहतर और प्रभावशाली बनाने का प्रयास करें इसके लिए आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाए। इस संबंध में विश्वभर के शिक्षाविद्ों का यह मानना है कि मात्र शिक्षक ही शिक्षा का समाधान नहीं है इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्य कुशल, उचित एवं नवीन दृष्टिकोण हो। शिक्षक के व्यक्तिव पर संवेगों का प्रभाव पड़ता है। सुख, दुख, चिन्ता, प्रेम आदि के कारण ही संवेग उत्पन्न होते है संवेग की अवस्था में कुछ समय के लिये मानव की बुद्धि से नियत्रंण हट जाता है इसके परिणाम अच्छे तथा बुरे दोनों ही हो सकते है। एक व्यक्ति को उतना ही संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान माना जाता है जितनी की क्षमता प्रदर्शित करता है।

एक शिक्षक में अपनी भावनाओं (संवेगों) को नियंत्रित करने की योग्यता महत्वपूर्ण है तथा इसके साथ ही विद्यार्थियों की भावनाओं एवं संवेगों को समझना और उन्हें सम्मान देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति अपनी बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक अनेक संवेगों से रूबरु होता है किन्तु वास्तविक जीवन की परेशानियों एवं कठिनाईयों के समक्ष स्वयं को बहुत ही असहाय महसूस करने लगता है। किसी भी प्रकार का संवेग जैसे :– दुःख, सुख, घृणा तनाव, चिन्ता, क्रोध उस पर अपना प्रभाव बहुत तीव्र गति से डालते है। जिससे व्यक्ति एक दम से उसके वशीभुत हो, दुख, घृणा आदि से व्यथित हो जाता है।

शिक्षक के जीवन में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होता है, शिक्षक के वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में संवेगों का योगदान होता है। लगातार संवेगात्मक असंतुलन/अस्थिरता व्यक्ति के वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करती है तथा अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करती है दूसरी और संवेगात्मक रूप से स्थिर व्यक्ति खुशहाल, स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

1.2 समस्या कथन :–

''जोधपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का सांवेगिक क्षमता के संदर्भ में अध्ययन''

1.3 अध्ययन का औचित्य :–

शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में उनके ज्ञान, कौशल एवं अभिवृति को सम्मिलित किया जाता है तथा संवेग वह भावनात्मक अवस्था है जिसमें शिक्षक सुख, दुख, भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या इत्यादि के अनुसार व्यवहार करता है। अर्थात् व्यक्ति के मन में जिन संवेगों की अधिकता रहती है वह बाते उसके व्यवहार में परिलक्षित होती है।

सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में चूंकि पुरूष अध्यापक भी होते है तथा महिला अध्यापिकाएँ भी। अतः उनकी अध्यापन कुशलता, योग्यता, अभिवृति, शिक्षण कार्य को प्रभावित करती है इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में सरकारी व निजी दोनों ही विद्यालयों के शिक्षकों से शिक्षण कार्य के अलावा अतिरिक्त कार्य सौंप दिए जाते है इसके साथ ही निजी शिक्षण साधनों में कई अधिकारी शिक्षकों के कार्यो में सदा हस्तक्षेप करते रहते है इससे शिक्षकों की संवेगात्मक क्षमता प्रभावित होती है क्योंकि जब तक शिक्षक सांवेगिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा तब तक वह अपने शिक्षण को प्रभावी नहीं बना सकता है।

सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले अध्यापकों की सांवेगिक क्षमता का अध्यापन पर क्या प्रभाव पड़ता है इसी समस्या का समाधान ढूढ़ने का प्रयास शोधकर्ता अपने लघु शोध कार्य में कर रहा है।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. जोधपुर शहर के सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता का अध्ययन करना।
2. जोधपुर शहर के निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता का अध्ययन करना।
3. जोधपुर शहर के सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. जोधपुर शहर के सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता का अध्ययन करना।

5. जोधपुर शहर के निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता का अध्ययन करना।

6. जोधपुर शहर के सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.6 शोध परिकल्पनाएँ :–

1. सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.7 अध्ययन का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन जोधपुर जिले तक सीमित है।

2. प्रस्तुत शोध जोधपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों तक सीमित है।

3. प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता का अध्ययन किया जायेगा।

1.8 शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :–

.	लय के प्रकार	क	शिक्षिकाएं	योग
	ारी उच्च माध्यमिक	25	25	50
	निजी उच्च माध्यमिक	25	25	50
	योग	50	50	100

1.9 शोध अध्ययन विधि :– सर्वेक्षण विधि

1.10 शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

क्र सं.	उपकरण का नाम	निर्माता का नाम
1.	संवेगात्मक क्षमता मापनी	डॉ. एच. सी. शर्मा डॉ. आर. एल. भारद्वाज

1.3 अध्ययन मे प्रयुक्त चरो की संक्रियात्मक परिभाषा :–

सांवेगिक क्षमता :–मनुष्य अपनी रोजाना की जिन्दगी में सुख, दुख, भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, घृण आदि का अनुभव करता है वह ऐसा व्यवहार किसी उत्तेजनावश करता है ; यह अवस्था संवेग कहलाती है ।

इंग्लिश एवं इंग्लिश (1958 के अनुसार) :–*''संवेग एक जटिल भावनात्मक स्थिति है इसमें गत्यात्मक एवं ग्रन्थीय क्रियायें होती है अथवा संवेग वह जटिल व्यवहार है, जिसमें अन्तरावयव क्रियाएँ महत्वपूर्ण है।''*

पास्सर एवं स्मीथ (2007) के अनुसार :– *''संवेग एक भावनात्मक अवस्था होती है जिसमें घटनाओं के प्रति संज्ञानात्मक दैहिक एवं व्यवहारपरक प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित होती है।''*

सांवेगिक क्षमता के अन्तर्गत उत्तम आचरण, आत्म मूल्यांकन, आत्म नियमन, आत्म–परिवीक्षण, ईमानदारी, शिष्टाचार, संवेदनशीलता, सहभागिता आदि को सम्मिलित किया गया है। अर्थात् तात्कालिक वातावरण तथा आन्तरिक आत्मन् से उत्पन्न विभिन्न प्रकार के सांवेगिक उद्दीपकों के प्रति उचित ढंग से एवं सफलतापूर्वक अनुक्रिया करने की क्षमता को सांवेगिक बुद्वि कहा जाता है।

1.11 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. क्रान्तिक अनुपात मान

1.12 प्रस्तुत शोध के प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

सारणी संख्या :– 03

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी शिक्षकों के सांवेगिक क्षमता संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात दर्शाती तालिका –

श्रेणी	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता का स्तर . 0.05
सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक	25	143.84	4.64	0.27	असार्थक
निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक	25	143.44	5.65		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर यह मालूम होता है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको ंका मध्यमान 143.84 तथा प्रमाप विचलन 4.64 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों केशिक्षकोंका मध्यमान 143.44 तथा प्रमाप विचलन 5.65 प्राप्त हुआ। दोनों मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने पर **टी मूल्य** का मान 0.27 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर असार्थक है। अर्थात् सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको ंकी सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः 0.05 विश्वास स्तर पर सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः **परिकल्पना न. 01 स्वीकृत** की जाती है।

सारणी संख्या – 04

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात दर्शाती तालिका

श्रेणी	शिक्षिकाओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता का स्तर . 0.05
सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाएं	25	146.04	3.94	1.65	असार्थक
निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाएं	25	143.72	5.77		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर यह मालूम होता है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान 146.04 तथा प्रमाप विचलन 3.94 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान 143.72 तथा प्रमाप विचलन 5.77 प्राप्त हुआ है दोनों मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने पर **टी मूल्य** का मान 1.65 प्राप्त हुआ जो कि 0..05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है अतः अन्तर असार्थक है अर्थात् सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः 0.05 विश्वास स्तर पर सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः **परिकल्पना न. 02 स्वीकृत** की जाती है।

1.13 निष्कर्ष–

1. सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।
2. सरकारी व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की सांवेगिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

1.14 प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ–

1. प्रस्तुत शोध अध्यापकों हेतु इस प्रकार उपयोगी है कि वे अपने प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकते है।
2. प्रस्तुत शोध शिक्षकों के लिए मार्ग–निर्देशन प्रदान करता है।
3. प्रस्तुत शोध शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सावेंगिक क्षमता से संबधित समस्याओं के निदान व उपचार के लिए शिक्षाविदों के लिए लाभदायक है।
4. प्रस्तुत शोधकार्य विद्यालयों के लिए उपयोगी है।
5. संवेगात्मक क्षमता का मूल्यांकन कर जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर बनने तथा शारीरिक व मानसिक रुप से चुनौतियों को स्वीकार कर स्वयं को संवेगात्मक रुप से सक्षम बनाने सम्बन्धी योग्यताओं का विकास कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **कपिल एच. के (2006) ;** सांख्यिकी के मूल तत्व ; आगरा : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।
- **अस्थाना बिपिन एवं अन्य (2007) ;** मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन; आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- **सरीन एवं सरीन (2008) ;** शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ ; आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
- **पाठक पी. डी. (2009) ;**शिक्षा मनोविज्ञान ; आगरा : अग्रवाल पब्लिकेषन्सं।
- **सिडाना अशोक कुमार एवं कुमारी पूजा (2009) ;** सी.टी.ई. द्वारा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षणिक दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययनं।
- **गैरेट हेनेरी ई (2010) ;** शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग ; नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।
- **कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2010) ;**शिक्षा मनोविज्ञान ; मेरठ : आर लाल बुक डिपो।
- **चौहान विजय कंवर (2012) ;** सरकारी व निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापक दक्षता का अध्ययन; एम. एड. लघु शोध प्रबंध शाह गोवर्द्धन लाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय; जोधपुर।
- **कच्छवाह किरण (2014) ;** अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन ; एम. एड. लघु शोध प्रबन्ध शाह गोवर्द्धन लाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय जोधपुर।
- **राजकुमार (2015) ;** तकनीकी शिक्षा संस्थानो में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण दक्षता का अध्ययन ; इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मेजमेन्ट सॉष्योलॉजी एंड ह्यूमेनस्टिक; से लिया गया ।
- **शाही उमा (2015) ;** राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

जर्नल्स–

- ; बुच. एम. बी.(1978–83)थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वोल्युम 1
- बुच. एम. बी.(1983–84) फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वोल्युम 1
- बुच. एम. बी.(1983–88) फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वोल्युम 2